નર (બ્રહ્માબાબા) + સિંહ (શિવબાબા)

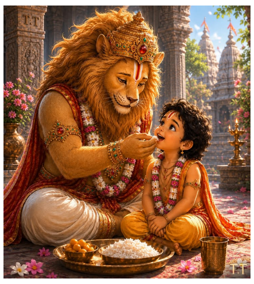

खुलते ही आंख हमें मिलते
हर पल वो साथ मेरे चलते
कितना वो प्यार हमे करते
उनकी पलकों में हम पलते
हम खुशनसीब उनको पाकर
जिंदगी हमारी गाती है
भगवान हमारा साथी है

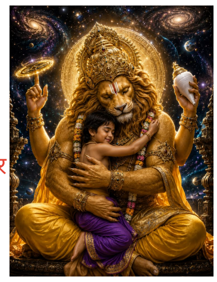

वो खुदा दोस्त है खिदमत में
हाजिर है हजार भुजाओं से
अपनी किस्मत के क्या कहने
सिर पर है हाथ दुआओं के
ऐसा साथी किसका होगा
ये सोच आंख भर आती है
भगवान हमारा साथी है

अपने भाग्य और प्राप्तियों को स्मृति में रख सदा हर्षित व सन्तुष्ट रहो, दृष्टि वृत्ति और प्रवृत्ति द्वारा सन्तुष्टता का अनुभव कराओ

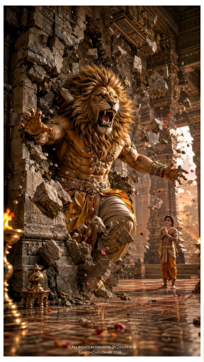

आज बापदादा सभी बच्चों को देख खुश हो रहे हैं। हर एक बच्चा परमात्म प्यार द्वारा पहुंच गये हैं। तो आज बापदादा हर एक बच्चे के मस्तक में भाग्य की रेखायें देख रहे हैं। ऐसा भाग्य और इतना बड़ा भाग्य सारे कल्प में किसी को प्राप्त नहीं है क्योंकि आपको भाग्य देने वाला स्वयं भाग्य दाता है। हर एक के मस्तक में पहले तो चमकता हुआ सितारा का भाग्य चमक रहा है। मुख में मधुर वाणी की रेखा चमक रही है। होठों पर मधुर मुस्कान की रेखा चमक रही है। दिल में दिलाराम बाप के लवलीन की रेखा चमक रही है। हाथों में सर्व खजानों के श्रेष्ठता की रेखा चमक रही है। पांव में हर कदम में पदम की रेखा चमक रही है। अभी सोचो ऐसा

डूब जाओ इस नारायणी नशे में...

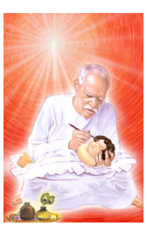
① 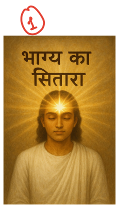

②

③ 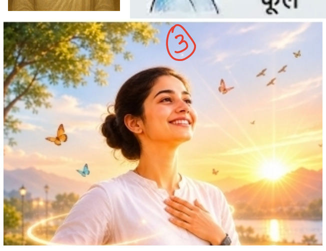
④ ⑤ 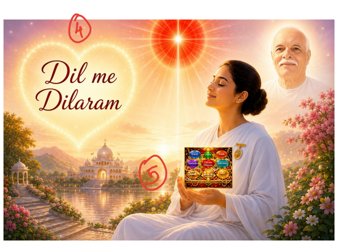

⑥

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Never Ever
I am the luckiest one forever (any moment)

Click

जी नहीं मेरे मीठे बाबा..

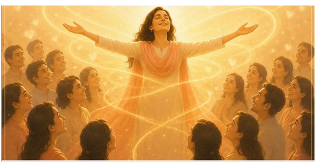

भाग्य और किसका हुआ है! इसलिए आपके यादगार चित्रों का भी भाग्य वर्णन होता रहता है। और यह भाग्य स्वयं भाग्यविधाता ने हर एक बच्चे का बनाया है।

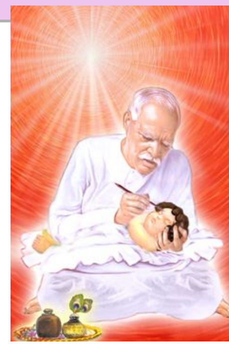

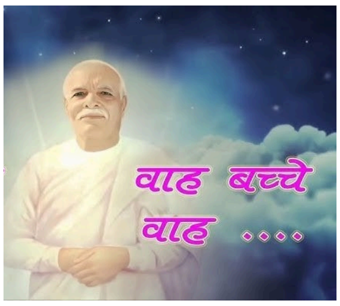

बापदादा हर बच्चे का भाग्य देख हर बच्चे को मुबारक दे रहे हैं - "वाह बच्चे वाह!" और यह भाग्य इस संगम पर ही मिलता है और चलता है।

अभी नहीं तो कभी नहीं

ये पक्का समझ लो..

संगमयुग का सुख सब युगों से श्रेष्ठ है। सतयुग का भाग्य भी संगम के पुरुषार्थ की प्रालब्ध है इसलिए संगमयुग की प्राप्ति सतयुग की प्रालब्ध से भी ज्यादा है। अपने भाग्य में खो जाओ। कुछ भी होता रहे, अपना भाग्य स्मृति में लाओ तो क्या निकलता है? वाह मेरा भाग्य! क्योंकि स्वयं भाग्य दाता आपका बाप है। तो भाग्य दाता द्वारा हर एक को अपना भाग्य मिला है। जानते हो कि हम इतने भाग्यवान हैं कि कभी-कभी जानते हो, सदा नशा रहता है? दुनिया वाले तो देखकर पूछते हैं आपको क्या मिला है? और आप लोग उत्तर क्या देते हो? जो पाना था वह पा लिया। पा लिया है, हाथ उठाओ। पा लिया है, अच्छा। पा लिया है? फलक

Mind very well...

चढ़ाओ नशा...

पुछो अपने आप से...

बहुत ढूंढने के बाद मिले हो मेरे बाबा..
अब आप को जो पा लिया है तो हमें
और कुछ भी नहीं चाहिए मीठे बाबा...
जो भी पाना था वो सब कुछ पा लीया है
मेरे प्राण बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Simple Math..

Characteristics of

That's All

से कहते हो, कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं, है ना फखुर? और मिला कैसे? सिर्फ बाप को जाना, माना, अपना बनाया तो भाग्य मिल गया। इस भाग्य को जितना स्मृति में लाते रहेंगे उतना हर्षित होते रहेंगे। भाग्यवान आत्मा का चेहरा सदा हर्षित रहेगा। रहेगा नहीं रहता है। उनकी दृष्टि, उनकी वृत्ति और उनकी प्रवृत्ति सदा सन्तुष्ट आत्मा बन स्वयं भी सन्तुष्ट रहेगी और दूसरों को भी सन्तुष्ट बनायेगी। तो आप सबको सन्तुष्टता का नशा रहता है? क्योंकि सन्तुष्टता का आधार है सर्व प्राप्ति। अप्राप्ति असन्तुष्टता का आधार है। तो आप क्या अनुभव करते हो? अप्राप्त कोई वस्तु है कि सर्व प्राप्ति हैं? प्राप्ति का नशा है? है, सदा है या कभी-कभी है? वैसे तो यही कहते हो पा लिया जो पाना था। तो जहाँ सर्व प्राप्ति है वहाँ असन्तुष्टता का नाम नहीं है।

Simple Math..

तो बापदादा आज देश विदेश, कितने देशों से सभी बच्चे आके इकट्ठे हुए हैं लेकिन सबसे दूर से आने वाला कौन? क्या अमेरिका वाले दूर से आये हैं? अमेरिका वाले दूर से आये हैं ना! और बाप कहाँ से

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

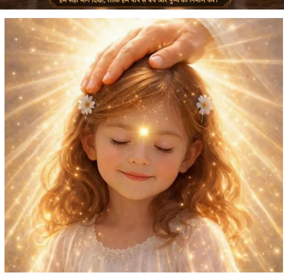

आया है? अमेरिका तो इसी लोक में है लेकिन बापदादा कहाँ से आये हैं? परमधाम से, ब्रह्मा बाप भी सूक्ष्मवतन से आये हैं। तो कौन दूर से आया? सबसे दूर कौन? यह है बाप और बच्चों के प्यार का नज़ारा। आपने कहा मेरा बाबा और बाप ने कहा मेरा बच्चा। सिर्फ एक को जानने से कितना वर्सा मिल गया। दुनिया वाले सुख के लिए, शान्ति के लिए ढूँढ रहे हैं - कहाँ शान्ति मिलेगी, कहाँ सुख मिलेगा और आपकी जीवन ही सुख शान्ति सम्पन्न हो गई। बापदादा से पूछते हो ना कि बापदादा क्या चाहते हैं? तो बापदादा हर बच्चे से यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा सदा स्वराज्य अधिकारी बनके रहे। कभी-कभी नहीं क्योंकि अभी के स्वराज्य अधिकार का वरदान बाप ने इस संगमयुग के लिए पूरा दिया है, थोड़ा नहीं, कभी-कभी वाला नहीं, सदा। तो सोचो सदा के लिए स्वराज्य अधिकारी बन रहते हो? क्योंकि बापदादा ने सुनाया कि इन सभी कर्मेन्द्रियों के, मन बुद्धि संस्कार के भी मालिक हो। सबके लिए मेरा शब्द बोलते हो, मैं नहीं बोलते हो, मेरा बोलते हो। तो मन बुद्धि संस्कार मेरा है तो मेरे के ऊपर सदा अधिकार रहता है। ऐसे मन बुद्धि संस्कार के ऊपर पूरा ही

अधिकारी हो, इसको कहा जाता है स्वराज्यधारी। जो आर्डर करो उसी प्रमाण यह कार्य करने के लिए निमित्त हैं। लेकिन इसके लिए चलते फिरते कार्य करते मालिकपन का नशा होना चाहिए। निश्चय और नशा।

They are bound to do so...

जागो जागो, समय पहचानो...

Call of time/समय की पुकार

अब तो आत्माओं को मन्सा द्वारा भी सेवा देने का समय है। चिल्लाते रहते, हे पूर्वज हमें थोड़ा सा सुख शान्ति की किरणें दे दो। तो हे पूर्वज दु:खियों की पुकार सुनाई देती है ना! बापदादा ने इशारा दे दिया है कि कुछ भी आपदा अचानक आनी है, इसके लिए सेकण्ड में फुलस्टॉप। वह प्रैक्टिस भी कर रहे हो क्योंकि उस समय पुरुषार्थ का समय नहीं होगा, अभ्यास करें, लगाओ फुलस्टॉप और हो जाए आश्चर्य की मात्रा, इसलिए पुरुषार्थ का समय अभी मिला हुआ है। उस समय प्रैक्टिकल करने का समय है, तो अभी से इस अभ्यास को कर भी रहे हैं, बापदादा रिजल्ट देखते हैं, अटेन्शन में है, कर भी रहे हैं लेकिन और भी अटेन्शन को अण्डरलाइन करो। देखो पुरुषार्थ कितना सहज है, मैं भी बिन्दी, लगाना भी बिन्दी है सिर्फ अटेन्शन देना है।

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Take it Seriously..

Baba Repeating this Again & Again....

Attention Please..!

अचानक

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.i

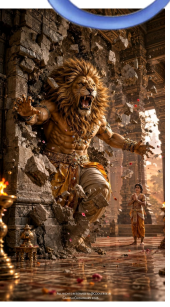

वो खुदा दोस्त है खिदमत में
हाजिर है हजार भुजाओं से
अपनी किस्मत के क्या कहने
सिर पर है हाथ दुआओं के
ऐसा साथी किसका होगा
ये सोच आंख भर आती है
भगवान हमारा साथी है

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
हे राजन्! जहाँ योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण हैं और जहाँ गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन हैं, वहींपर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है—ऐसा मेरा मत है॥ ७८॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसन्न्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

बापदादा विशेष बच्चों को सौगात देते हैं बच्चे मैं आपके सदा साथ हूँ। बाबा कहा और बच्चों के लिए बाप सदा हाज़िर है। (How Sweet...!) जो कहा गया है हजूर हाज़िर है, सर्वव्यापी नहीं है लेकिन बच्चों के आगे हजूर हाज़िर है। तो सदा विजयी बनना, जहाँ भगवान साथ है वहाँ विजयी बनना क्या मुश्किल है। विजय आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। सिर्फ मेरा बाबा कहा तो विजयी है ही (100% Guaranteed) इसलिए सदा विजयी बनना, जो याद में रहता उसके लिए अति सहज है। मुश्किल नहीं। जहाँ भगवान है वहाँ विजय है ही। तो आज बापदादा सभी बच्चों को देख खुश हो रहे हैं कि कितने स्नेह से, कौन से साधन से आये हैं? ट्रेन में या प्लेन में, वह तो शरीर के द्वारा पहुंच गये हैं लेकिन दिल से तो प्यार आपको यहाँ लाया है। हिम्मत आपकी है तो मदद बाप की है ही। अभी बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चा हर कर्म में अपने स्वराज्य की सीट पर स्थित रहे। अच्छा।

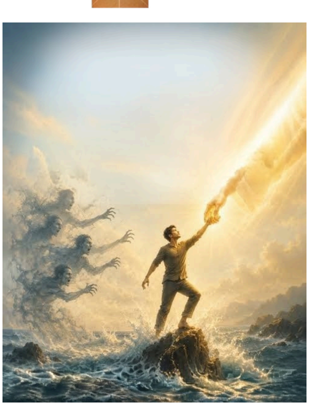

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

Points: ज्ञान यो M.imp.

For New commers

26-07-26 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 02-02-11 मधुबन

आज पहले बारी कौन आये हैं, वह हाथ उठाओ। खड़े हो जाओ। बहुत हैं। अच्छा, जैसे पहले बारी आये हो वैसे पहला नम्बर जाना है ना। जाना है? बाबा का वरदान है कि जो हिम्मत रखेगा उसको बाप की मदद भी मिलेगी और हिम्मत से जितना भी आगे बढ़ने चाहो वह चांस है क्योंकि टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है। याद में रहो और जो प्राप्त हुआ है उससे औरों की सेवा करो। जितनी सेवा करेंगे उतनी दुआयें मिलेंगी और वह दुआयें आपको आगे बढ़ाती रहेंगी। सन्देश देते जाओ बाकी हर एक की तकदीर। लेकिन आप सन्देश दे दो। पुण्य अपना जमा करते रहो। तो पुण्य आपको आगे बढ़ाता रहेगा। अच्छा।

m.m.m....imp.

Never Ever try to underestimate the Power of दुआ

बापदादा अमृतवेले सभी तरफ चक्र लगाते हैं, उनके लिए चक्र लगाना क्या बड़ी बात है। और बापदादा ने यह भी कह दिया है कि चार बजे के मिलन की विशेषता यह भी है कि 4 बजे बापदादा सभी बच्चों को सहज ही वरदान देते हैं। वरदान दाता का विशेष पार्ट अमृतवेले होता है। जो भी वरदान चाहिए वह बापदादा दे देते हैं। ट्रायल करके

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

देखना। लेकिन आप सभी भी वरदान लेने के लिए अलर्ट रहना। अगर अलर्ट नहीं रहे तो बापदादा चक्र लगाके चला जायेगा और आप सोचते रहेंगे इसलिए अमृतवेले का महत्व देते तो हैं लेकिन और अटेन्शन देना। बापदादा ने देखा है कि समय अनुसार सेवा भी बढ़ रही है और सेवा के कारण बाप से वरदान लेना उससे दूर रह नहीं सकते।

बाकी डबल फारेनर्स मैजारिटी पुरुषार्थ करते भी हैं फिर भी अटेन्शन को अन्डरलाइन करना। बाकी मधुबन में कैसे भी पहुंच जाते हो बापदादा उसकी विशेष सभी बच्चों को मुबारक दे रहे हैं। बापदादा ने सुना कि जो बापदादा ने संस्कार के ऊपर इशारा दिया है, उसके ऊपर समझते हैं कि हमें करना ही है और करने के लिए रोज़ अमृतवेले जैसे स्वमान रखते हैं उसके साथ-साथ भिन्न-भिन्न प्रकार से कोई

Point to be Noted

एक संस्कार के ऊपर अटेन्शन दो, आज के दिन इस संस्कार के ऊपर विशेष अटेन्शन देना है और

फिर रात्रि को जब बापदादा को अपना सारे दिन का चार्ट देते हो उस समय उस संस्कार की रिजल्ट भी विशेष सुनाओ तो विशेष अटेन्शन हो जायेगा।

किसी न किसी संस्कार के ऊपर अटेन्शन रखना है। तो जैसे याद के ऊपर अटेन्शन देते हो उसके साथ-साथ उसी समय यह भी रिजल्ट बापदादा को

पोतामेल of [याद + particular संस्कार]

Example

दो। अगर मानो आप चाहते हो लेकिन उस दिन आपके सामने कोई संस्कार मिटाने का कार्य नहीं हुआ, तो अपने आपको बाप की मुबारक देना और रोज़ ऐसे बाप की मुबारक विशेष इस संस्कार प्रति लेते जाना तो संस्कार कार्य में आने में कमी पड़ती जायेगी। तो जैसे योग के बारे में चेक करते हो वैसे संस्कार के लिए भी चेक करो। संस्कार रोज़ नहीं आता है, कभी-कभी आता है, जो पुरुषार्थी हैं उनका बाईचांस पेपर आता है, बाकी रोज़ नहीं आता है। लेकिन चेकिंग रोज़ होगी तो यह भी

AT Tension

अटेन्शन टेन्शन को खत्म करता जायेगा क्योंकि बापदादा ने देखा है फॉरेन वालों में से कोई-कोई बच्चे कोई कार्य शुरू करते हैं तो अटेन्शन देते हैं।

Self Checking

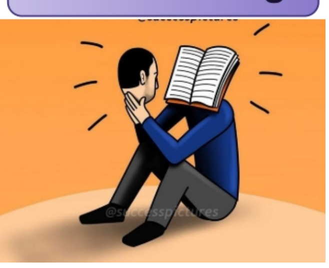

Note it down

तो अटेन्शन देने वाले ही मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। बाबा का भी वरदान है। समझा। अभी इसके पीछे लग जायेंगे ना, रोज़ रिजल्ट की चेकिंग करेंगे ना तो संस्कार स्वयं ही ढीला हो जायेगा। और जो

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

बापदादा चाहता है कि संस्कार की सब्जेक्ट में नम्बरवन जाओ, जो संस्कार चाहते हो वही कार्य में लगे। हो जायेगा।

Point to be Noted

अटेन्शन में आया है ना तो हो जायेगा। लेकिन ऐसे नहीं हो जायेगा, अटेन्शन देना पड़ेगा। संगठन में ही यह संस्कार निकलते हैं, क्यों? आपके चित्रों में जो पूजा करते हैं वह आपके

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

May I have your Attention Please..!

Point to ponder very deeply...

संस्कार कितने अच्छे गाते हैं। तो बने हैं तभी तो वर्णन करते हैं। अपना देवताई चित्र इमर्ज करो क्या गाते हैं? ऐसे देवता तो बनना ही है ना। अच्छा।

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

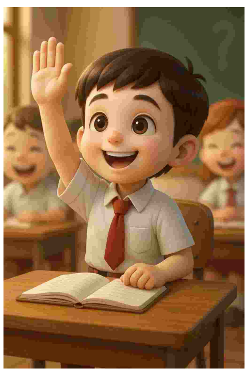

बाकी सब डबल विदेशी पुरुषार्थ में सफलता का अनुभव करते रहते हैं ना! करते हैं? हाथ उठाओ जो सफलता अनुभव करते हैं। वाह! हाथ तो अच्छे उठा रहे हैं। तो लक्ष्य रखेंगे अभी इसके पीछे अटेन्शन देना ही है। इसमें भी नम्बर लेना ही है। तो

m.m.m....imp.

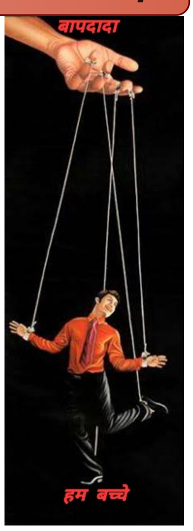

आपको देख औरों को भी उमंग आयेगा क्योंकि आप निमित्त हो ना। और निमित्त वालों को बापदादा की विशेष मदद भी मिलती है। बाकी बाबा खुश है कि सेन्टर्स वृद्धि को प्राप्त होते रहते हैं। पुरुषार्थ की तरफ अटेन्शन है लेकिन अभी परिवर्तन के निमित्त बनने वाले बनो तो आपको देख औरों को भी परिवर्तन शक्ति का उमंग आयेगा। बाकी बापदादा खुश है कि पुरुषार्थ में नम्बरवार तो होते ही हैं, वह तो अन्डरस्टुड है

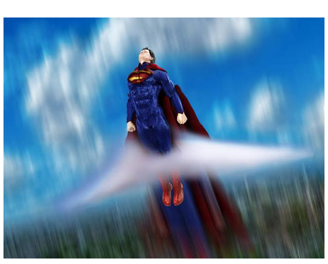

लेकिन पुरुषार्थ की तरफ अटेन्शन है, और बढ़ाना है। बाकी बापदादा की रोज़ यादप्यार तो मिलती रहती है। देखो, घर बैठे भी बापदादा की यादप्यार

एक दिन भी मिस नहीं होती, अगर रोज़ विधिपूर्वक मुरली पढ़ते हैं तो। एक दिन भी यादप्यार मिस नहीं करते। मिलती है ना! मिलती है? रोज़ यादप्यार मिलती है। सभी को मिलती है ना? यह है बापदादा के प्यार की निशानी। मुरली मिस तो यादप्यार भी मिस। सिर्फ मुरली नहीं मिस की लेकिन बापदादा का यादप्यार, वरदान सब मिस किया। मुरली तो पढ़ भी लेंगे लेकिन जो समय फिक्स है बापदादा की याद-प्यार लेने का, वह तो मिस हुआ ना। तो उमंग है इस पर बापदादा खुश भी है। अच्छा, मुरली मिस करने वाले हैं? डबल फॉरेनर्स में हैं, कोई है जो मुरली मिस करता हो? कारण से? नहीं है। नहीं मिस करते। एक ने हाथ उठाया है। अभी मिस नहीं करना, मुरली मिस नहीं करना। चाहे फोन द्वारा सुनो। पढ़ नहीं सकते हैं तो कैसे भी सुनो जरूर। हाज़िरी जरूर लगाओ। अच्छा। बाकी जो भी सभा में आये हैं, नये भी हैं पुराने भी हैं तो यह पक्का पक्का पक्का नोट करो मुरली नहीं मिस करनी है क्योंकि बाप रोज़ परमधाम से आते हैं, कितना दूर से आते हैं, बच्चों के लिए आता है ना! जैसे बाप मुरली मिस नहीं करते, ऐसे बच्चों को भी मुरली मिस नहीं करना है। अच्छा।

रहमदिल मेरा बाबा

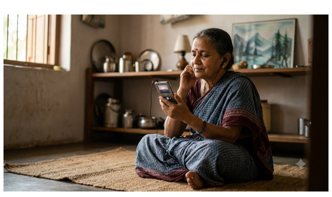

By Any Means

At any cost...

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा ...p.

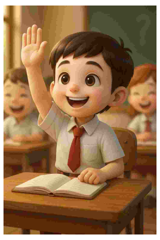

अभी जो मधुबन में आता है ना, तो जैसे फार्म भरते हैं, उसमें यह भी लिखो कि मुरली रोज़ सुनी या कितने दिन मिस किया? मंजूर है? जिसको मंजूर है वह हाथ उठाओ। मधुबन वाले भी हाथ उठाओ।

Point for Life time

किसी भी कारण से मुरली मिस नहीं करनी है। जैसे खाना नहीं मिस करते हो तो यह भी भोजन है ना। वह शरीर का भोजन, यह आत्मा का भोजन। अच्छा लगा। जो नये भी आये हैं, आने को तो मिला है ना। उन्हों को भी यह नियम पालन करना है। जैसे और नियम हैं वैसे यह भी नियम है।

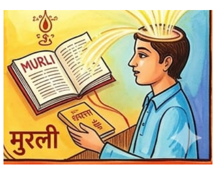

Definition of

ब्राह्मण माना मुरली सुनने वाला, सेवा करने वाला। अच्छा।

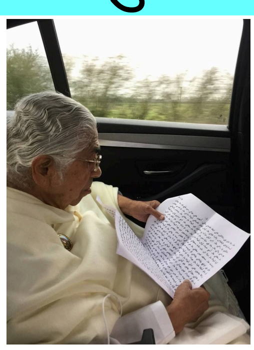

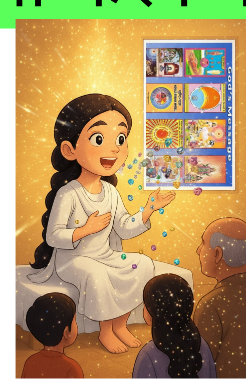

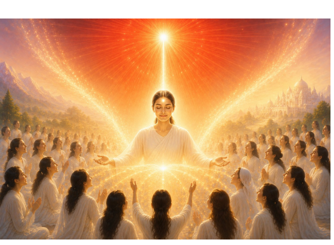

अभी सभी तरफ के बच्चों को बापदादा यादप्यार के साथ मुबारक भी दे रहे हैं। सदा उमंग उत्साह में आगे बढ़ भी रहे हो और बढ़ते रहना। कभी अपना उमंग-उत्साह किसी भी कारण से, किसी भी बात से कम नहीं करना। बात, बात हो जाती है लेकिन

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

m.m.m....imp.

26-07-26 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 02-02-11 मधुबन

पुरुषार्थ और बाप का प्यार वह अपना है इसीलिए कभी भी अपने बुद्धि को बाप के बिना और कोई बातों में बिजी नहीं करना। बाप और बाप की मुरली और बाप द्वारा सर्विस जो मिली है वह सर्विस करते रहना। अच्छा। अभी क्या कहें, साथ तो रहना है ना। तो छुट्टी लेते हैं, यह भी नहीं कह सकते। साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और साथ आयेंगे। अच्छा। अभी समाप्ति।

मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

आज हमें जो मिल रहा है उसकी वैल्यू करना सीखे...
सारी सृष्टि की समग्र घन संपत्ति, भोग विलास एवं भौतिक प्राप्तियां ,
in short सब कुछ - एक तरफ
और
मीठे बाबा और उनके महावाक्य/मुरली एक तरफ।

"दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है,
मिल जाए तो मिट्टी है, खो जाए तो सोना है।"
- निदा फ़ाज़ली

पूछो अपने आपसे...
कहीं हमारी भी स्थिति ऐसी ही तो नहीं है ना,
जब की स्वयं भगवान(पारस मणी) हमें मिल गए हैं
और हम उनको मिट्टी के समान वैल्यू देकर चल रहे हैं...?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument

26-07-26 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 02-02-11 मधुबन

वरदान: शक्ति रूप की स्मृति द्वारा पतित संस्कारों का नाश करने वाले काली रूप भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

सदा अपना यह स्वरूप स्मृति में रहे कि "मैं सर्व शस्त्रधारी शक्ति हूँ, मुझ पतित-पावनी पर कोई पतित आत्मा के नज़र की परछाई भी नहीं पड़ सकती।"

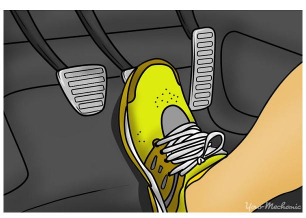

पतित आत्मा के पतित संकल्प भी न चल सकें - ऐसी अपनी ब्रेक पावरफुल चाहिए।

Litmus Test

यदि किसी पतित आत्मा का प्रभाव पड़ता है - तो इसका अर्थ है कि प्रभावशाली नहीं हो।

जो स्वयं संघारी हैं वह कभी किसका शिकार नहीं बन सकते।

तो ऐसा काली रूप बनो जो कोई भी आपके सामने ऐसा संकल्प भी करे तो उनका संकल्प मूर्छित हो जाए।

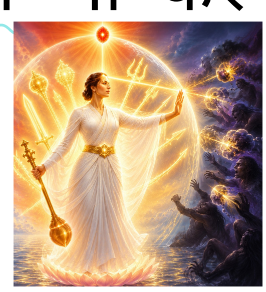

स्लोगन:- रॉयल रूप की इच्छा का स्वरूप नाम, मान और शान है।

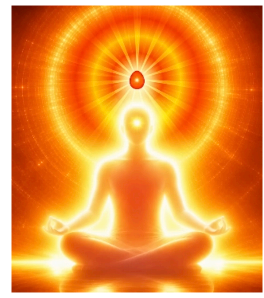

ये अव्यक्त इशारे - ज्वालास्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

सारथी अर्थात् आत्म-अभिमानी क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नम्बरवन की सिद्धि प्राप्त की। तो फॉलो फॉदर करो।

जैसे बाप देह को अधीन कर प्रवेश होते अर्थात् सारथी बनते हैं देह के अधीन नहीं होते, इसलिए न्यारे और प्यारे हैं।

बाप समान

ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान सारथी की स्थिति में रहो।

Automatically

सारथी स्वत: ही साक्षी हो कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे और सब-कुछ करते भी माया की लेप-छेप से निर्लेप रहेंगे।

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans जून 26 → Click

All अव्यक्त इशारे जून 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

सर्वशक्तिमान ईश्वर को सिर्फ और सिर्फ प्रेम से ही हम अपना बना सकते हैं।

वरदान:- स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति को समाप्त करने वाले सम्पूर्ण ज्ञानी भव

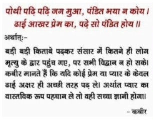

स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है। स्नेह ब्राह्मण जन्म का वरदान है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

12

11-12-2024 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

संगमयुग पर स्नेह का सागर स्नेह के हीरे मोतियों की थालियां भरकर दे रहे हैं, तो स्नेह में सम्पन्न बनो।

स्नेह की शक्ति से परिस्थिति रूपी पहाड़ परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन जायेगा। माया का कैसा भी विकराल रूप वा रॉयल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ। तो स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति समाप्त हो जायेगी।

Point to be Noted

या किनारा कर लेते हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा कि जो दिल के स्नेही हैं, बाप के दिल के स्नेही, सर्व के स्नेही अवश्य होंगे। दिल का स्नेह बहुत सहज विधि है सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की। चाहे कोई कितना भी ज्ञानी हो, लेकिन अगर दिल का स्नेह नहीं है तो ब्राह्मण जीवन में रमणीक जीवन नहीं होगी। रूखी जीवन होगी क्योंकि ज्ञान में, स्नेह बिना अगर ज्ञान है तो ज्ञान में प्रश्न उठते हैं क्यों, क्या! लेकिन स्नेह ज्ञान सहित है तो स्नेही सदा स्नेह में लवलीन रहते हैं। स्नेही को याद करने की मेहनत करनी नहीं पड़ती। सिर्फ ज्ञानी है, स्नेह नहीं है तो मेहनत करनी पड़ती है। वह मेहनत का फल खाता, वह मुहब्बत का फल खाता। ज्ञान है बीज लेकिन पानी है स्नेह। अगर बीज को स्नेह का पानी नहीं मिलता तो फल नहीं निकलता है। ये पक्का समझ लो

Short cut

m.m.m.....Imp

Point to be Noted for life time

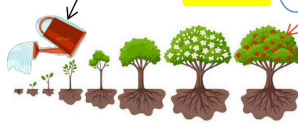

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

30/11/05

सुनाया था, मेहनत से मुक्त होने का सहज साधन है - दिल से बाप के अति स्नेही बन जाना। आप

08-06-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-11-05 मधुबन

तो आज बापदादा सर्व बच्चों के दिल का स्नेह चेक कर रहे थे। चाहे बाप से, चाहे सर्व से। तो आप

उस सर्वशक्तिमान को हम अपने सच्चे प्रेम से ही प्राप्त कर सकते हैं नहीं तो चाहे कितना ही ज्ञान पढ़ ले लेकिन हम उस सर्वशक्तिमान को नहीं पा सकते। प्रभु की प्राप्ति का मूल मंत्र है उस सच्चे माशूक के प्रेम में डूब जाना।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥

अर्थात्:-

बड़ी बड़ी किताबे पढ़कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले। अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

- कबीर

Example

कार्तिकेय और गणेश दोनों ही शिव और पार्वती/ब्रह्मा माँ के बच्चे हैं लेकिन कार्तिकेय ज्ञान के आधार पर चलता है और गणेश ज्ञान और दिल के सच्चे प्रेम के आधार पर चलता है
इसलिए शास्त्रों में बताया है कि जब सारी सृष्टि का सात बार चक्कर लगाने की बात आई तो कार्तिकेय चक्कर ही लगाता रहा और गणेश ने अपने माता-पिता अर्थात शिव बाबा और ब्रह्मा माँ को ही अपनी सृष्टि मानकर उनके सात फेरे लगा लिए और कुछ ही पल में वह विजय हो गया।

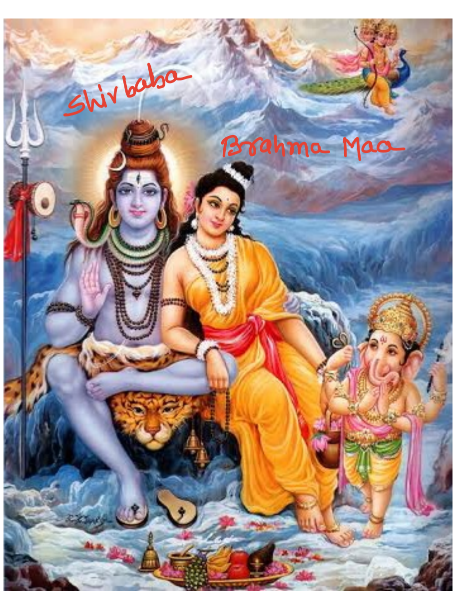

Example

जब यशोदा जी ने श्री कृष्ण को अपने अहंकार से बांधना चाहा तो सभी रस्सियाँ छोटी पड़ गई किंतु जब उन्होंने समर्पण भाव से प्यार की रस्सी में उनको बांधना चाहा तो श्री कृष्ण अपने आप ही बंध गए।

जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो,
वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरूषार्थ का चार्ट भी शुरू से रिवाइज़ करके देखो।
उसमें मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं। चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट्स में पास हो उसको देखो।
जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं – ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा।

वैसे ही यहाँ चार सम्बन्ध भी हैं,
तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं – सत् बाप, सत् शिक्षक और सद्‌गुरू परन्तु
चौथा सम्बन्ध है साजन और सजनी का। m.m.m. Imp.
यह भी एक विशेष सम्बन्ध है-आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई।
यह सम्बन्ध भी पुरूषार्थ को सहज कर देता है।

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वेसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं।
एक तो बाप के सम्बन्ध में-'फरमान वरदार',
शिक्षक के सम्बन्ध में-'इर्मानदार' और
गुरू के सम्बन्ध में-'आज्ञाकारी' और
साजन के सम्बन्ध में-'वफादार।'

जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।

AV- 21/7/73

19-04-2024 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो। भक्त लोग इन बातों को नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी खुश रहे और इन बातों का सिमरण करते रहें - ऐसे बच्चे बहुत थोड़े हैं। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। जो गायन है द्रोपदी का, वह सब प्रैक्टिकल में हो रहा है। द्रोपदी ने क्यों पुकारा? यह मनुष्य नहीं जानते। बाप ने समझाया है - तुम सब द्रोपदियां हो।

m. Imp. point to be Noted

ऐसे नहीं, फीमेल सदैव फीमेल ही बनती है। दो बारी फीमेल बन सकती है, जास्ती नहीं। मातायें पुकारती हैं - बाबा रक्षा करो, हमको दुशासन

इसका अर्थ है कि कोई भी आत्मा हो उसको male
एवं female दोनों का पार्ट बजाना ही है

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व-सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई रस रह गया है क्या कि जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो कोई मेल की, फीमेल की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता? साजन व सजनी के रूप में भी बाप से सजनी बन व साजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व- सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान् और कहाँ मैं, इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव नर्कवासी विष्ठा का कीड़ा ऐसे स्वयं का रूप सामने लाओ और तुलना करो कि कल क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़ क्या ले रहा हूँ? गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बाप-दादा टच कर सकता है? स्नेह दृष्टि दे सकता है? अर्ज़ी मान सकता है? कम्पलेन्ट व उलहना सुन सकता है? इतने नॉलेजफुल होने के बाद भी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो, तो उसे भक्त आत्मा से भी गिरी हुई आत्मा कहेंगे। भक्त भी किसी युक्ति से अपनी वृत्ति को स्थिर करते हैं। तो मास्टर नॉलेजफुल भक्त आत्मा से भी नीचे गिर जाते हैं। तो क्या ऐसी आत्मा की कोई प्रजा बनेगी? जमादार की कोई प्रजा बनेगी क्या या वह स्वयं प्रजा बनेंगे?
AV- 11/07/74

In Short, बाबा को हम साजन तो बनाते ही है किंतु चु की वो भी आत्मा ही है तो सजनी भी बना सकते है....
क्योंकि आत्मा में विष्णु चतुर्भुज अर्थात male and Female दोनों के संस्कार विद्यमान है।

यह शरीर जो आप देख रहे हैं वह संपूर्ण ऊर्जा से बने हुए हैं इसलिए मीठे बाबा ने कई बार अव्यक्त वाणी में कहा हुआ है कि अगर शरीर ही देखना है तो लाइट का शरीर देखो अर्थात ऊर्जा से निर्मित शरीर देखो। तो माया आप के ऊपर वार नहीं कर सकेगी।

आपने अगर बचपन में या कभी भी लेजर लाइट से खेला होगा तो आपको पता होगा की एक ही लेजर बीम के आगे जब हम दूसरा तीसरा लेजर Cap लगाते हैं तो उससे जो सामने चित्र बनता है वह दूसरा तीसरा होता है।
इसी प्रकार आत्मा ज्योति तो एक ही है लेकिन सतयुग से लेकर कलयुग अंत तक भिन्न-भिन्न शरीर रूपी लेजर cap (male व female के शरीर रूप) के द्वारा वह अपने आप को menifest/अभिव्यक्त करती है।

Example

Different shapes/patterns through a single laser beam

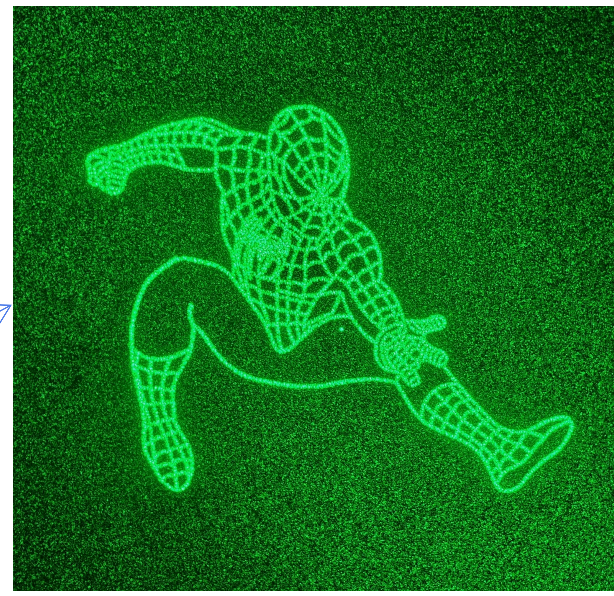

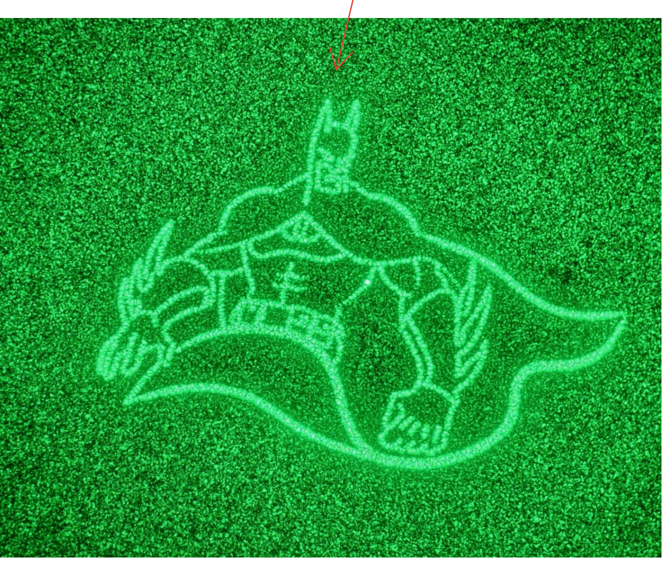

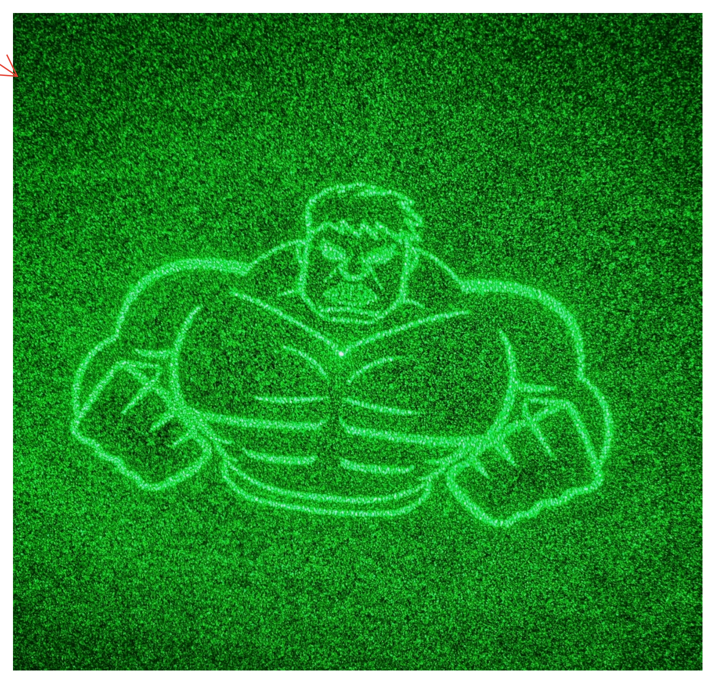

आप सबसे एक विनम्र अनुरोध है कि जब आप इस गीत(next page पर) को पढ़े तो कृपया ग्रामर और शब्दों के माया जाल से बच के रहिए (हमारा ग्रामर अच्छा नहीं है) सिर्फ वहां जो बाबा के प्रति भाव रखा गया है उसको ही लक्ष्य में रखें तो आप बाबा के प्यार का सच्चा अनुभव कर पाएंगे। नहीं तो, सागर के ऊपरी लहरों में मूंज कर बाहर निकल जाएंगे। सागर की गहराई में छिपे हुए रत्नों से आप वंचित रह जाएंगे एवं शब्द और ग्रामर की माया जाल में ही फस के रह जाएंगे।

यहां जो भाव रखे हैं उस भाव में आप अपने भी सच्चे दिल के भाव को Add करके संपूर्ण पवित्र और सच्चे प्यार में डूब जाइए।

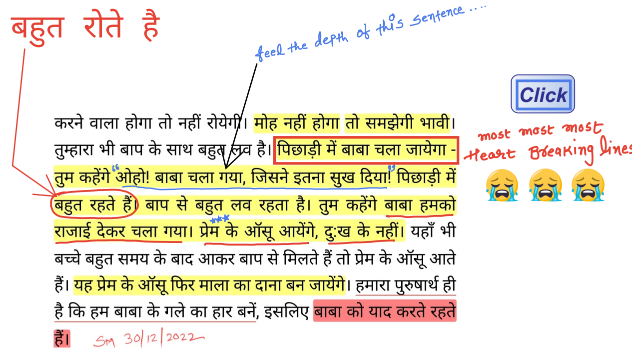

करने वाला होगा तो नहीं रोयेगी। मोह नहीं होगा तो समझेगी भावी। तुम्हारा भी बाप के साथ बहुत लव है। पिछाड़ी में बाबा चला जायेगा - तुम कहेंगे "ओहो! बाबा चला गया, जिसने इतना सुख दिया!" पिछाड़ी में बहुत रहते हैं। बाप से बहुत लव रहता है। तुम कहेंगे बाबा हमको राजाई देकर चला गया। प्रेम के आँसू आयेंगे, दु:ख के नहीं। यहाँ भी बच्चे बहुत समय के बाद आकर बाप से मिलते हैं तो प्रेम के आँसू आते हैं। यह प्रेम के आँसू फिर माला का दाना बन जायेंगे। हमारा पुरुषार्थ ही है कि हम बाबा के गले का हार बनें, इसलिए बाबा को याद करते रहते हैं।

आज स्व दर्शन फिराते हुए ड्रामा के उस पॉइंट पर आकर खड़े हुए हैं जहां पर आत्मा अपने प्राणों से भी प्यारे शिव बाबा से 5 पल, 5 मिनट, 5 घंटे, 5 दिन, 5 महीने या 5 साल नहीं परन्तु पूरे 5000 सालों के लिए अलग हो रही है। मीठे बाबा ने एक मुरली में कहा था कि बच्चे आप जब बाप से जुदा होंगे तो बहुत रोएंगे लेकिन वो दुःख के आंसू नहीं होंगे किंतु स्नेह के आंसू होंगे और इसीलिए वह अंतिम घड़ियां बहुत ही कठिन होगी।

उस समय मीठे बाबा जो कि प्यार के सागर तो है ही किंतु साथ ही चतुर सुजान भी है ना
इसलिए वह आत्माको युक्ति से आथत देते हुए अपने से दूर करेंगे इस अनादि ड्रामा के नए कल्प में पार्ट बजाने के लिए।

जैसे एक छोटा सा बच्चा पहली बारी जब स्कूल जाता है तो अपनी माँ से लिपटकर कितना न रोता है, उसकी माँ को भी अत्यंत प्यार आ रहा होता है लेकिन बच्चे को पढ़ना भी तो जरूरी है ना। इसीलिए वह अपने अंदर उमड़ रहे बहुत ही बड़ी सुनामी से भी ज्यादा शक्तिशाली प्यार को रोक कर बच्चे को युक्ति से अपने से छुड़ाकर स्कूल में रखकर आती है। भले ही वह घर आते समय या घर आकर बच्चे के प्यार में खुद भी फूट फूट कर रोएगी फिर भी वह बच्चे के सामने बच्चे को हिम्मत देने के लिए अपने आंसुओं को पी जाती है और जूठे ही सही पर बच्चे को हिम्मत दिलाने वाले वायदे करती है जिससे कि वो बच्चा सक्षम हो अपनी माँ से बिछड़ने के लिए।

कुछ ऐसे ही, मीठे बाबा हमको भी अपने से जब दूर करेंगे तो जो इस गीत में वर्णित है कुछ ऐसे ही युक्तिसे आत्माको आथत और शक्ति देकर अपने से दूर करेंगे।

तो आज वो अंतिम घड़ियां याद करके उस प्राणों से भी अति प्यारे मीठे शिव बाबा के प्यार में डूब जाओ। सिर्फ सतह पर लहराते नहीं रहना।

Most important and strict condition to listen this song to submerge in the love of Supreme: आपके पास जब कम से कम 2 घंटे संपूर्ण माना संपूर्ण एकांत हो, जिसमें सिर्फ आप और मीठे शिव बाबा हो, तीसरा न कोई - तब ही यह गीत बार बार सुनना उन अंतिम घड़ियों के दृश्य को बुद्धि पटल पर अंकित कर के और उस प्रेम के सागर में डूब जाना क्योंकि मीठे बाबा उलाहना देते हैं कि "बच्चे प्यार में डूब जाना सीखो, तुम डुबकी लगाकर बाहर निकल जाते हो।"

इस गीत में आत्मा सजनी है और मीठे शिव बाबा साजन है...
इस सारे गीत में वह मीठा शिव साजन धीरज दे रहे है आत्मा सजनी को, जो उस सलोने साजन से बिछड़ने के कारण प्यार में बहोत ही रो रही है।
================

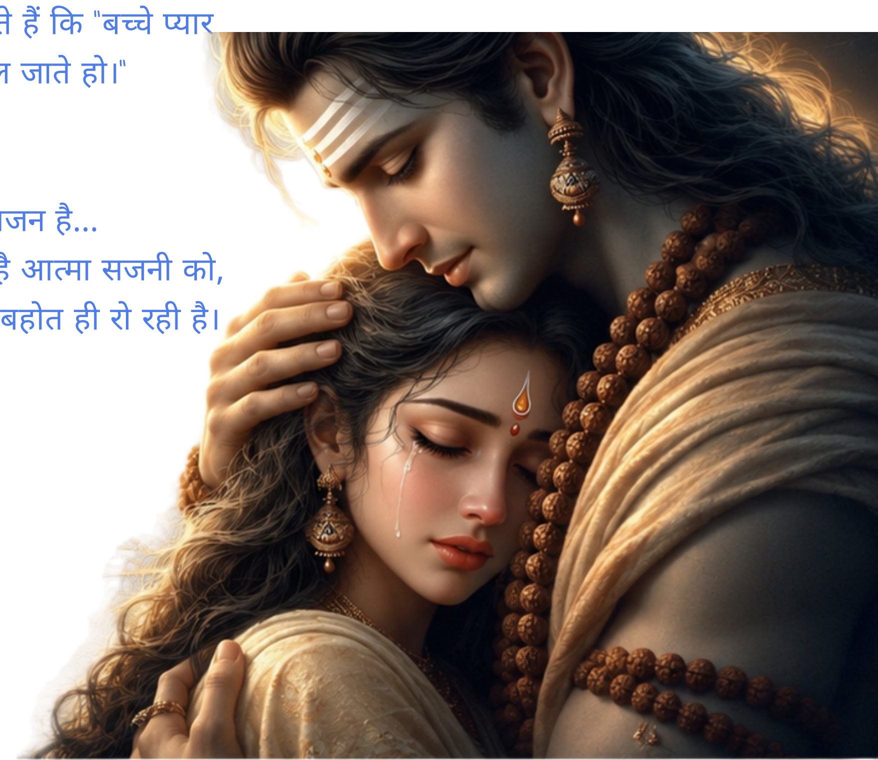

link of this song → Click

शिव साजन:

मैं रहूँ या ना रहूँ
तुम मुझ में कहीं बाकी रहना

(सतयुग में भले मैं तुम्हारे साथ रहूँ या ना रहूँ पर तुमने इस छोटे से संगम युग में अपने सच्चे प्यार से, अपनी वफादारी से जो मुझे अपना बनाया है तो उसी प्यार की यादों के अपनेपन से मुझमें बाकी रहना अर्थात मैं तुम्हें परमधाम में भी जो तुमने संगम पर साथ निभाया है उसे याद करके दूर होते भी सूक्ष्म रीति तुम्हारे साथ रहूंगा।)

मुझे नींद आये जो आखिरी
तुम ख्वाबों में आते रहना
बस इतना है तुमसे कहना X 4

(भले यह हमारा आखरी मिलन है क्योंकि अब तो इस नए कल्प के अंत में 5000 साल के बाद ही तुमसे मिलूंगा किंतु तुमसे बिछड़कर मैं परमधाम में भी तुमने जो संगम पर मुझसे प्यार निभाया है वही प्यार सपनों के रूप से सारे कल्प, अपने आप में संजोए रखूंगा..
बस...
इतना ही तुमसे कहना है। क्योंकि और कोई शब्द नहीं है मेरे पास..)

मैं रहूँ या ना रहूँ
तुम मुझ में कहीं बाकी रहना

{आत्मा सजनी के प्यार के बेशुमार आशुओं को पोछते हुए, शिव साजन अपने गले से लगाते हुए कहते है कि...}

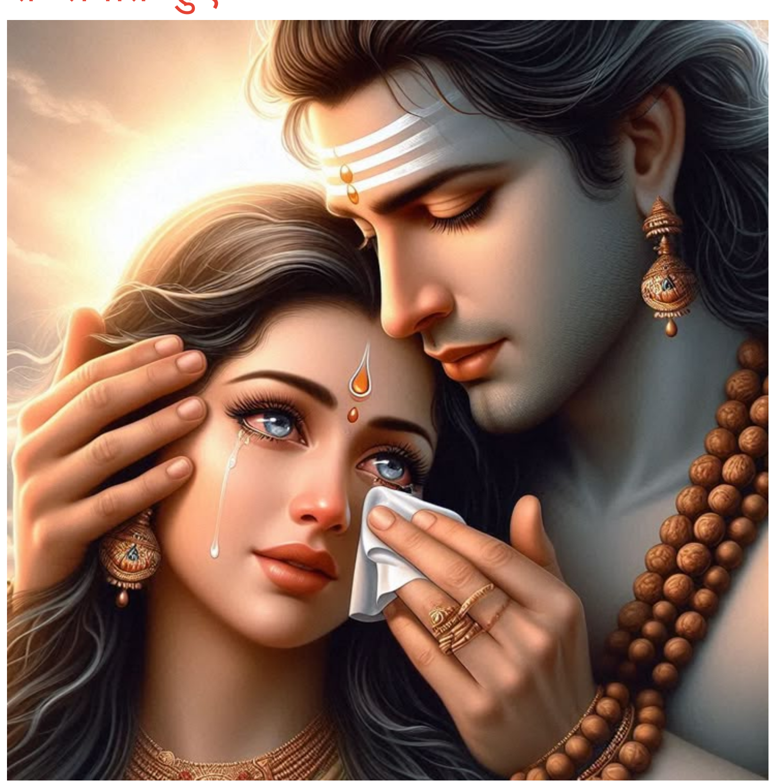

@@@@@&&&&&@@@@

किसी रोज़ बारिश जो आए
समझ लेना बूंदों में मैं हूँ

(तुम्हारे सतो प्रधान स्वर्ग में जब हल्की सी भी बारिश हो तो भले ही मैं परमधाम में हूं, पर ऐसा ही समझना कि मैं उन बूंदों में हूं और उन बूंदों के द्वारा अपने प्यार से तुम्हे बहला रहा हूँ ....)

सुबह धूप तुमको सताए
समझ लेना किरणों में मैं हूँ

(वैसे तो वहां तुम्हारे स्वर्ग में प्रकृति सतो प्रधान होने के कारण तुम्हे कोई भी तत्व रिंचक मात्र भी परेशान नहीं कर सकता/सता नहीं सकता
फिर भी तुम्हारे उस स्वर्ग में किसी सुबह अगर सूर्य की सुनहरी किरणें तुमको अगर थोड़ा सा भी सताए तो ऐसा समझ लेना कि उन सूर्य की किरणों में मैं हूं और उन किरणों के द्वारा तुमको अपना प्यार जता रहा हूं, {क्योंकि साकार में अपना प्यार जताने का समय संगमयुग था और प्यार जताने का माध्यम था मुरली, पर वो समय तो अब बीत चुका है ना।} इस लिए इन सूक्ष्म इशारों से मेरे प्यार को महसूस करते रहना।)

कुछ कहूँ या ना कहूँ
तुम मुझको सदा सुनते रहना

(भले में तुमसे कुछ भी ना कहूँ क्योंकि तुमसे बहुत बहुत दूर परमधाम में जो बैठा हूँ किंतु तुम उस मीठे स्वर्ग में भी अपने दिल ही दिल में मुझे बड़े प्यार से सुनते रहना क्योंकि दूर रहते भी जैसे कि मैं सदा तुम्हारे साथ हूं...)

बस इतना है तुमसे कहना X 4

@@@@#####&&&&&

हवाओं में लिपटा हुआ मैं
गुज़र जाऊँगा तुमको छू के
अगर मन हो तो रोक लेना
ठहर जाऊँगा इन लबों पे X 2

(स्वर्ग की ठंडी ठंडी सतो प्रधान शीतल हवा की लहरें तुम्हें अगर छुकर गुजरे तो समझ लेना कि उस हवाओं में लिपटकर मैं ही तुमको छू रहा हूं और अगर तुम्हें मन करे तो मुझे अपने सच्चे प्यार से रोक लेना क्योंकि मैं तो हूं ही हमेशा से तुम्हारा most obedient servant ना, तो तुम्हारे हुक्म पर मैं तुम्हारे लबों पर ठहर जाऊंगा)

मैं दिखूँ या ना दिखूँ
तुम मुझको महसूस करना

(क्योंकि मैं तो हूं ही निराकार, अदृश्य इसलिए भले मैं तुमको स्वर्ग में दिखूं या ना दिखूं, तुम मुझको हमेशा महसूस करते रहना कि मैं हर पल तुम्हारे साथ ही हूँ...)

बस इतना है तुमसे कहना X 4

(अब इससे ज्यादा और कहूं भी तो क्या...?
{आत्मा सजनी के आंसूओ को पोछते हुए शिव साजन धीरज देते हुए कह रहे है..}
बस मुझको तुमसे इतना ही कहना है कि अपने मीठे स्वर्ग में सुख से रहो, मैं तो सदा तुम्हारे दिल में ही तो हूँ।)

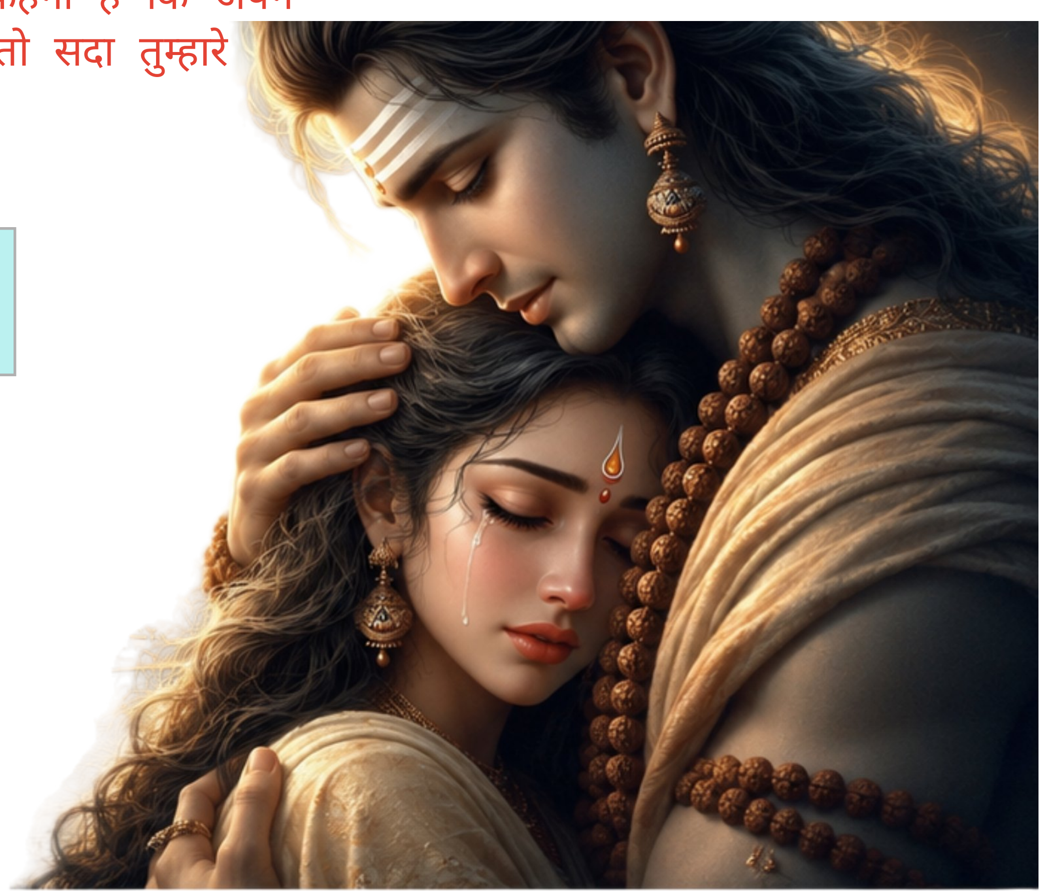

मैं रहूँ या ना रहूँ
तुम मुझ में कहीं बाकी रहना

For such type of songs to submerge in the love of Supreme → **Click**